यूटीयू में तीन दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी का हुआ आगाज

शोध एवं नवाचार, डिजिटल ग्रीन कृषि जैसे वैश्विक स्तर के समसामयिक विषयों पर चर्चा होगी

अमर हिंदुस्तान

देहरादून। वीर माधो सिंह भण्डारी उत्तराखण्ड प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के सभागार में विश्वविद्यालय के तत्वावधान में ग्लोबल हेल्थ टैक्नो मैनेजमेंट फोरम के तहत सम्बद्ध संस्थान ग्लोबल इंस्टीट्यूट ऑफ फार्मास्यूटिकल एजुेशन एंड रिसर्चकाशीपुर के साथ संयुक्त रूप से स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं के निवारण और आवश्यकताओं की पूर्ति की बेहतरी के लिए स्वास्थ्य, प्रौद्योगिकी और प्रबन्धन में वैश्विक रूझानों पर आधारित तीन दिवसीय अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी का आगाज शुक्रवार सेहो गया है। अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी 17 मार्च तक चलेगी। तीन दिन होने वाली इस अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी में ड्रग डिजाइन और डिस्कवरी स्वास्थ्य सेवाओं का डिजिटलीकरण, आर्टिफिशियल इंलैलिजेंस, शोध एवं नवाचार, डिजिटल ग्रीन कृषि जैसे वैश्विक स्तर के समसामयिक विषयों पर चर्चा होगी। तीन दिनों तक चलने वले इस अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी में अमेरिका, रूस, जर्मनी, फ्रांस, तुर्की, मलेशिया, इण्डोनेशिय, ग्रीस, बेल्जियम, स्लोवेनिया, ब्रिटेन, स्विटजरलैंड, साउथ कोरिया सहित भारत के विभिन्न क्षेत्रों से वैज्ञानिक, शिक्षाविद, उद्योगपति, सरकारी एवं गैर सरकारी संगठन के बुद्धिजीवी वर्ग तीन दिन चलने वाली इस अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी में स्वास्थ्य देखभाल विकास और प्रबन्धन कौशल विकास के नये आयामों पर समीक्षा करेंगे। इस तीन दिवसीय अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र में बतौर मुख्य अतिथि विश्वविद्यालय के कुलाधिपति एवं प्रदेश के राज्यपाल लेफ्टिनेंट जनरल गुरमीत सिंह ने अपने सम्बोधन में कहा कि संगोष्ठी का आयोजन विश्वविद्यालय, ग्लोबल मैनेजमेंट फोरम और ग्लोबल इंस्टीट्यूट ऑफ फार्मास्यूटिकल एजुकेशन एंड रिसर्च के साझा प्रयासों का परिणाम है।उन्होंने कहा कि स्वास्थ्य, प्रौद्योगिकी और प्रबन्धन में विकसित हो रहे वैश्विक रूझान के आधार पर आयोजित एक तीन दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी रूपी विचार मंथन से निश्चित रूप से अमृत निकलेगा। जिससे दुनिया के उद्योगों और समाज को नया आकार देने में सहयोग मिलेगा। उन्होंने कहा कि पिछले वर्ष आयोजित जी-20 सम्मेलन से हम भारतीयों ने विश्व को ''वसुधैव कुटुम्बकम'' का जो रास्ता दिखाया, उस पर आगे बढ़ते हुए हम आज इस संगोष्ठी के पड़ाव पर पहुंचे हैं जिसमें दुनिया के कोने-कोने से प्रतिभागी मानव जाति के सतत और व्यापक कल्याण के लिए विचारों का आदान-प्रदान करेंगे। राज्यपाल ने अपने सम्बोधन में कहा कि चिकित्सा में हो रहे परिवर्तनों के दृष्टिगत उपचार के लिए तैयार करने को जीनोमिक्स और डेटा एनालिटिक्स का लाभ उठाया जा रह है और टेलीमेडिसिन की बढ़ोत्तरी हो रही हे जिसके चलते स्वास्थ्य सुधार के साधनों तक पंहुच, विशेषकर दूरदराज के क्षेत्रों में, हो रही है। उन्होंने कहा कि आर्टिफिशिएल इंटैलीजेंस और मशीन लर्निंग जैसी टैक्नोलॉजी की ओर बढ़ते रूझान प्रबन्धन की प्रथाओं में क्रांति आ रही है। डेटा संचालित निर्णय लेने व नियमित कार्यों के स्वचालन को सक्षम कर रहे हैं। इस तरह के रूझान वैश्विक परिदृश्य में प्रतियोगी बने रहने के लिए लगातार अनुकूलन और नवाचार की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि कोविड महामारी ने हमें सिखाया है कि स्वास्थ्य, तकनीकी तथा उनके प्रबन्धन के बहुआयामी विकास को बहुत तेज रफ्तार की जरूरत है। अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी में देश-विदेश से 52 शोध पत्रों के प्रतिभागियों का तकनीकी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो ओंकार सिंह द्वारा स्वागत किया गया। संगोष्ठी में वैज्ञानिक प्रोफेसर सोनिया नित्यानंद कुलपति किंग जॉर्ज मेडिकल युनिवर्सिटी लखनऊ, प्रो ओंकार सिंह कुलपति वीर माधो सिंह भण्डारी उत्तराखण्ड प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय देहरादून, स्विटजरलैंड से हेल्थ इकोनॉमिस्ट और बिजनेस डेवलॉपमेंट एक्सपर्ट डॉ ओमर साका, अमेरिका से प्रोफेसर गुंडा जॉर्ज, डॉ ओम प्रकाश, रूस से डॉ डीमटरी, ग्रीस से प्रोफेसर एथेना जीरोनीकाकी एवं इंग्लैण्ड से डॉ आरूनी सक्सेना, ग्लोबल इंस्टीट्यूट ऑफ फार्मास्यूटिकल एजुेशन एंड रिसर्च काशीपुर के चेयरमैन डॉ अनिल कुमार सक्सेना एवं संगोष्ठी के आयोजक सचिव डॉ सिसिर नांदी, संस्थान के निदेशक एवं कार्यक्रम के अध्यक्ष प्रोफेसर दीपक तेवतिया सहित विभिन्न क्षेत्रों के विषय विशेषज्ञों सहित विश्वविद्यालय के कुलसचिव डॉ सत्येन्द्र सिंह, वित्त नियंत्रक विक्रम सिंह जंतवाल, परीक्षा नियंत्रक डॉ वीकेव पटेल, ग्लोबल इंस्टीट्यूट ऑफ फार्मेसी के निदेशक डा दीपक तेवतिया तथाविश्वविद्यालय के सम्बद्ध फार्मेसी संस्थानों के निदेशक, प्राचार्य, शिक्षकों एवं छात्र-छात्राओं ने अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी कि उदघाटन सत्र में प्रतिभाग किया।